Appendix 17

लिखना सीखना माने क्या?

जितेन्द्र कुमार

इस बात पर तो कोई दो मत नहीं हो सकते कि लिखना व पढ़ना जिन्दगी की जरूरत है और स्कूलों में हम बड़े जोर शोर से इन्हें सीखाने में लगे हुए हैं। जब हम लिखने के बारे में बात करते हैं तो हमारा उद्देश्य होता है कि बच्चे को वह भाषा लिखना सिखाना जो वह बोलता है। जाहिर सी बात है हम इसे बोलने के अलावा अभिव्यक्ति के एक अन्य माध्यम के रूप में देखते है जिसमें बच्चे और व्यस्क अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। इस संबंध में मेरे कुछ अनुभव हैं जिनकी चर्चा मैं यहां करना चाहूंगा। मैं दो अलग–अलग सरकारी स्कूलों की कक्षा–4 के अनुभवों की बात करूंगा। कक्षा 'अ' और कक्षा 'ब' दो सामान्य ग्रामीण सरकारी शालाओं की कक्षाएं है। कक्षा 'ब' से मेरा परिचय थोड़ा पुराना था जबकि कक्षा 'अ' से मैं पहली बार ही मिला था।

दोनों कक्षाओं में एक ही गतिविधि करके देखी गई। बच्चों को कोरे कागज देकर उन्हें अपने 'मन' से बिना देखे कोई कहानी या कविता लिखने के लिए कहा गया।

इस गतिविधि का मकसद बच्चों की लिखने की क्षमता और उनमें छिपी संभावनाओं को पहचानना व समझना था।

कक्षा–अ

कक्षा 'अ' में बच्चों की संख्या लगभग 22 थी। दिखने में यह कक्षा सुव्यवस्थित थी। कमरे का आकार बड़ा नहीं था परन्तु बच्चों को बैठने के लिए पर्याप्त जगह थी। स्कूल के शिक्षकों का व्यवहार बच्चों के प्रति काफी नरम था। बच्चों को कोरे कागज बांटकर मैंने उन्हें बिना देखे कोई कहानी या कविता लिखने के लिए कहा। उद्देश्य था यह देखना कि उन्हें लिपि का ज्ञान था या नहीं। सभी ने बैठ कर जल्दी से लिखना शुरू किया। बच्चों ने अपनी पाठ्यपुस्तक की कविताएं जो उन्हें याद थीं और बिना देखे लिखना आती थीं। यह काम उन्होंने बड़ी जल्दी आज्ञाकारी ढंग करके दिखाया।

पाठ्यपुस्तक से हटकर सिर्फ एक लड़की द्वारा गाय का निबन्ध लिखा गया। पुस्तक से बच्चों ने मोटे तौर पर चार कविताएं लिखी। कक्षा 'अ' से मिले लिखाई के कुछ नमूने :

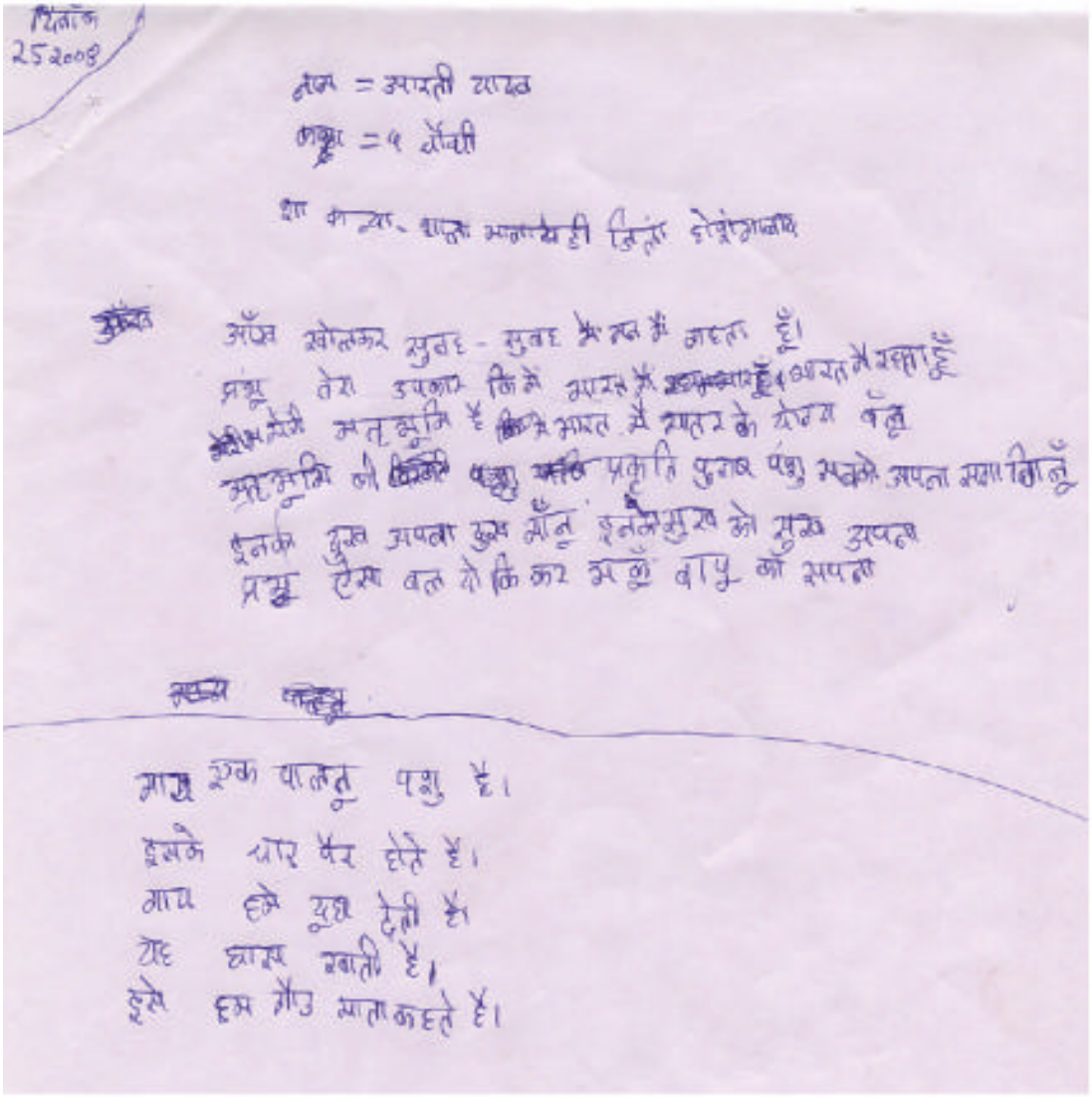

आरती द्वारा लिखित कविता व गाय का निबन्ध । कविता पाठ्यपुस्तक से ली गई है।

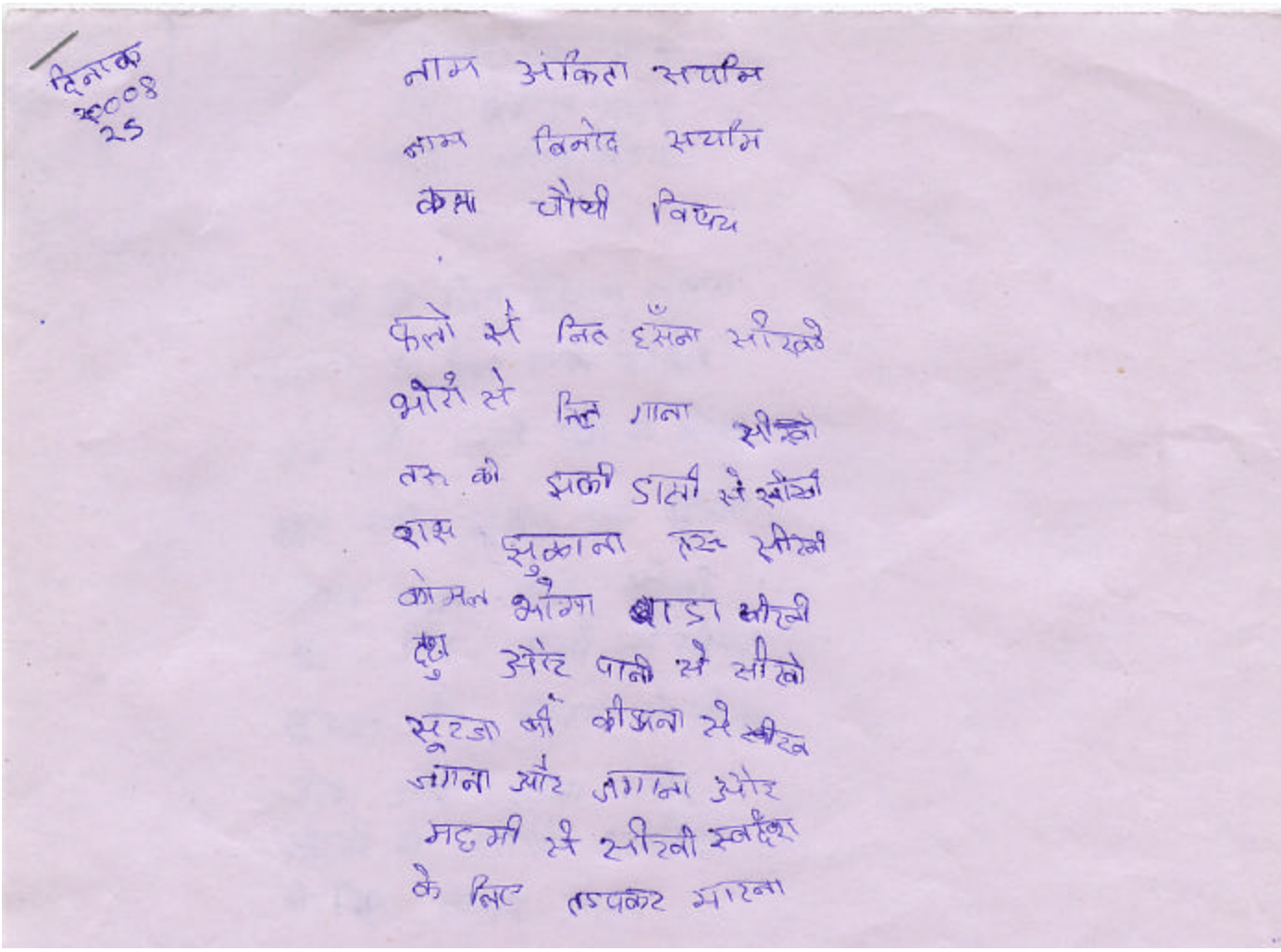

दिनांक 2008 25

नाम अंकिता स्याम
नाम विनोद स्याम
कक्षा चौथी विषय

फूलों से नित हँसना सीखो
भौंरों से नित गाना सीखो
तरु की झुकी डालों से सीखो
शाख झुकाना तुम सीखो
कोमल अंगो भाड़ा सीखो
दूध और पानी से सीखो
सूरज की किरनों से सीखो
जगना और जगाना और
मछली से सीखो स्वदेश
के लिए तड़पकर मरना

अंकिता द्वारा लिखित कविता जो कि पाठ्यपुस्तक से ली गई है।

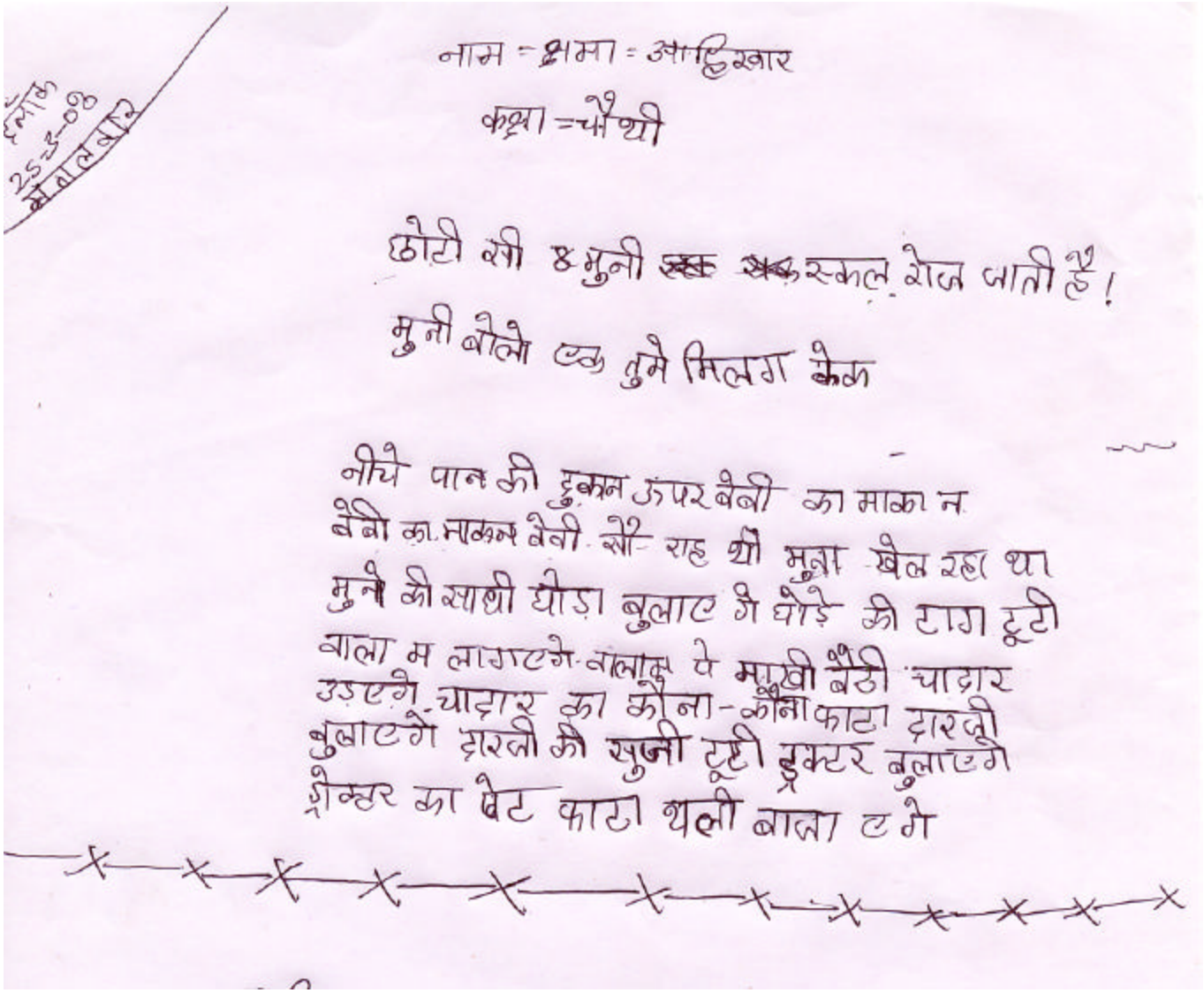

क्षमा द्वारा लिखित कविता जो पाठ्यपुस्तक से ली गई है।

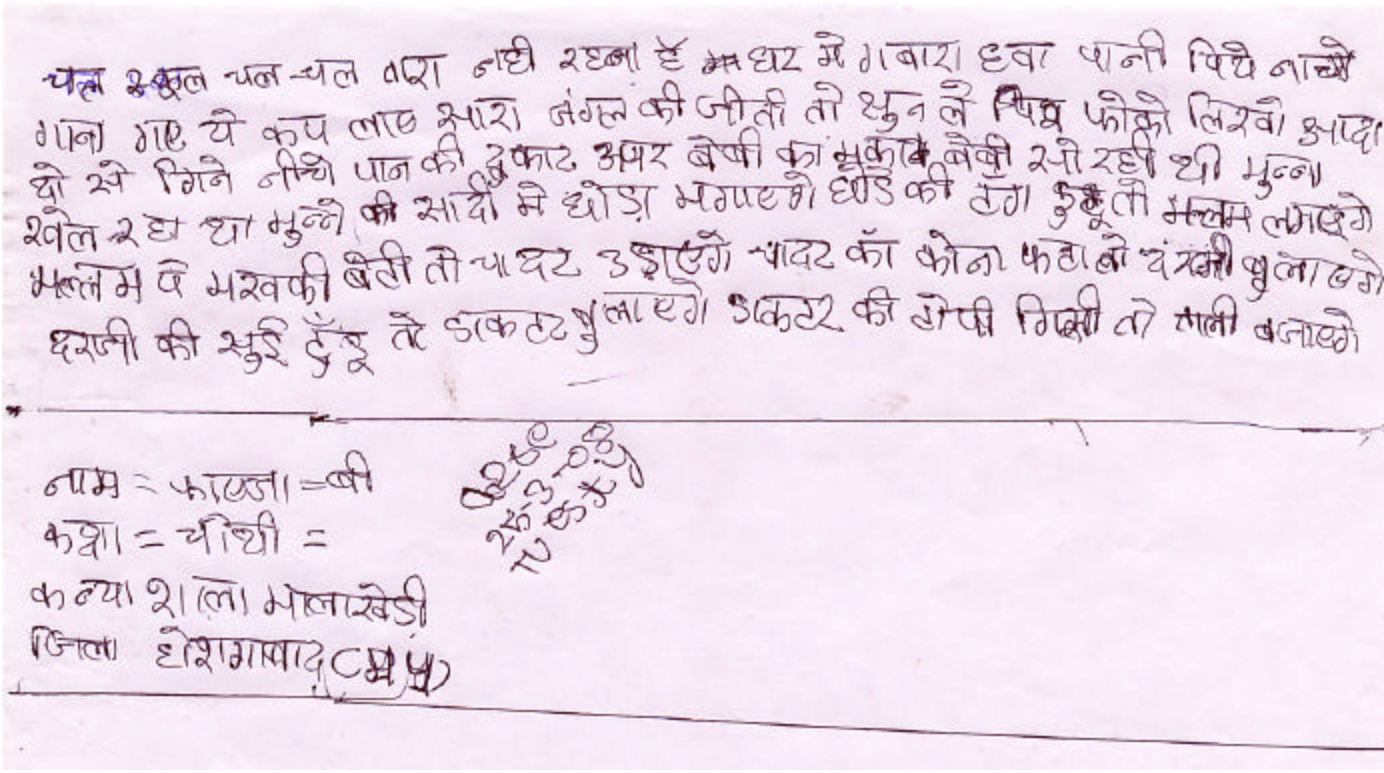

चल स्कूल चल-चल वहा नहीं रहना है घर मे गुब्बारा हवा पानी पिये नाचो
गाना गाए ये कप लाख सारा जंगल की जीती तो सुन ले पिक फोटो लिखो आधा
दो से गिने नीचे पान की दुकान अगर बेकी का मुकाबला बेकी सो रही थी मुन्ना
खेल रहा था मुन्नी की सादी मे घोड़ा भगाएगा घोड़े की टांग टूटी तो मलहम लगाएगे
मलहम पे मख्खी बैठी तो चादर उड़ाएगे चादर का कोना फटा तो दर्जी बुलाएगे
दर्जी की सुई टूटी तो डाक्टर बुलाएगे डाक्टर की टोपी गिरी तो ताली बजाएगे

नाम = फायजा = बी
कक्षा = चौथी =
कन्या शाला मालाखेडी
जिला होशंगाबाद (म प्र)

फायजा द्वारा लिखित कविता जो पाठ्यपुस्तक से ली गई है।

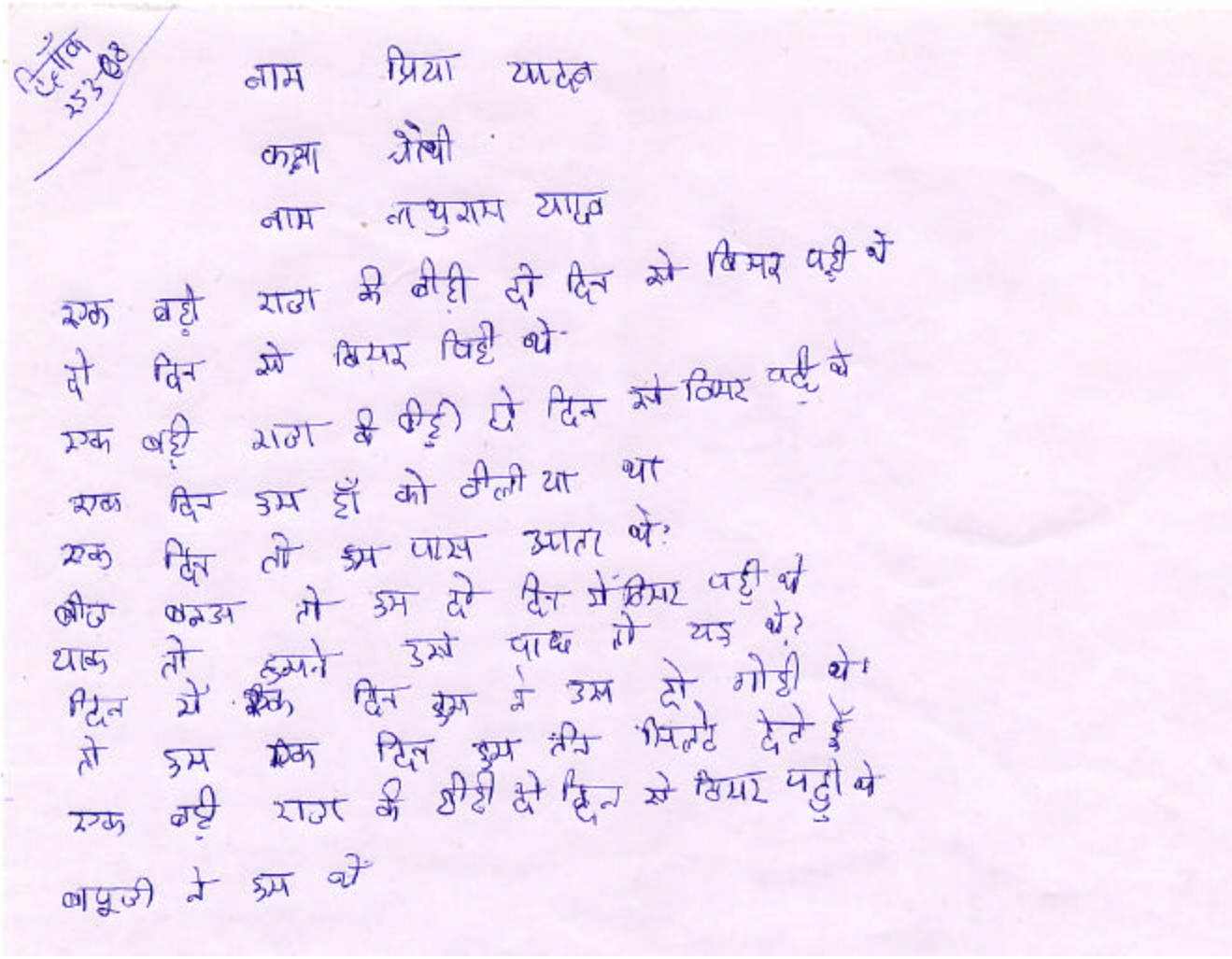

दिनांक 25-3-08
नाम प्रिया यादव
कक्षा चौथी
नाम नथुराम यादव
एक बड़ी राजा की बीटी दो दिन से बिमार पड़ी थे
दो दिन से बिमार पिड़ी थे
एक बड़ी राजा की बीटी दो दिन से बिमार पड़ी थे
एक दिन उस हूँ को बीली था था
एक दिन तो उस पास आता थे?
बीज बनुआ तो उस दो दिन से बिमार पड़ी थे
याद तो उसने उसे पाछ तो यड थे?
दिन से एक दिन उस ने उस दो गोड़ी थे।
तो उस एक दिन उस तीन मिठाई देते हैं
एक बड़ी राजा की बीटी दो दिन से बिमार पड़ी थे
बापूजी ने उस को

प्रिया द्वारा लिखित कविता जो पाठ्यपुस्तक से ली गई है।

कक्षा–ब

अब हम कक्षा 'ब' की बात करते हैं। ये बच्चे भी कक्षा 4 के ही विधार्थी थे, परन्तु एक अन्य सरकारी स्कूल के। इन बच्चों को भी वही काम दिया गया। इन्हें भी बिना देखे लिखना था।

परन्तु यहां मुझे बच्चों की तरफ से तीन तरह की प्रतिक्रियाएं मिली।

1. सर जी हमको नहीं आता लिखते नहीं बनता सर।
2. सर जी हम किताब में से देख के लिख देंगे।
3. सर हम चितर बना दें।

कुछ लिखने के लिए भी तैयार थे।

इस कक्षा में हमें बच्चों के 'मन' का काफी कुछ परिचय मिला। हालांकि यहां बच्चों ने जो लिखा उसमें कुछ पढ़ा जा सकता था, और कुछ चीजों को पढ़ पाना आसान काम नहीं था। जिन बच्चों को लिखना नहीं आता था उन्होंने चित्र बनाए, कहानियां बोल कर सुनाई जिनकों वैसा का वैसा ही लिखा गया। हमें एक विविधता बच्चों के लेखन में इस कक्षा में देखने को मिली, न केवल इस रूप में कि बच्चों ने क्या लिखा बल्कि इस रूप में भी कि बच्चों ने कैसे लिखा।

कक्षा 'ब' के लेखन के कुछ नमूने :

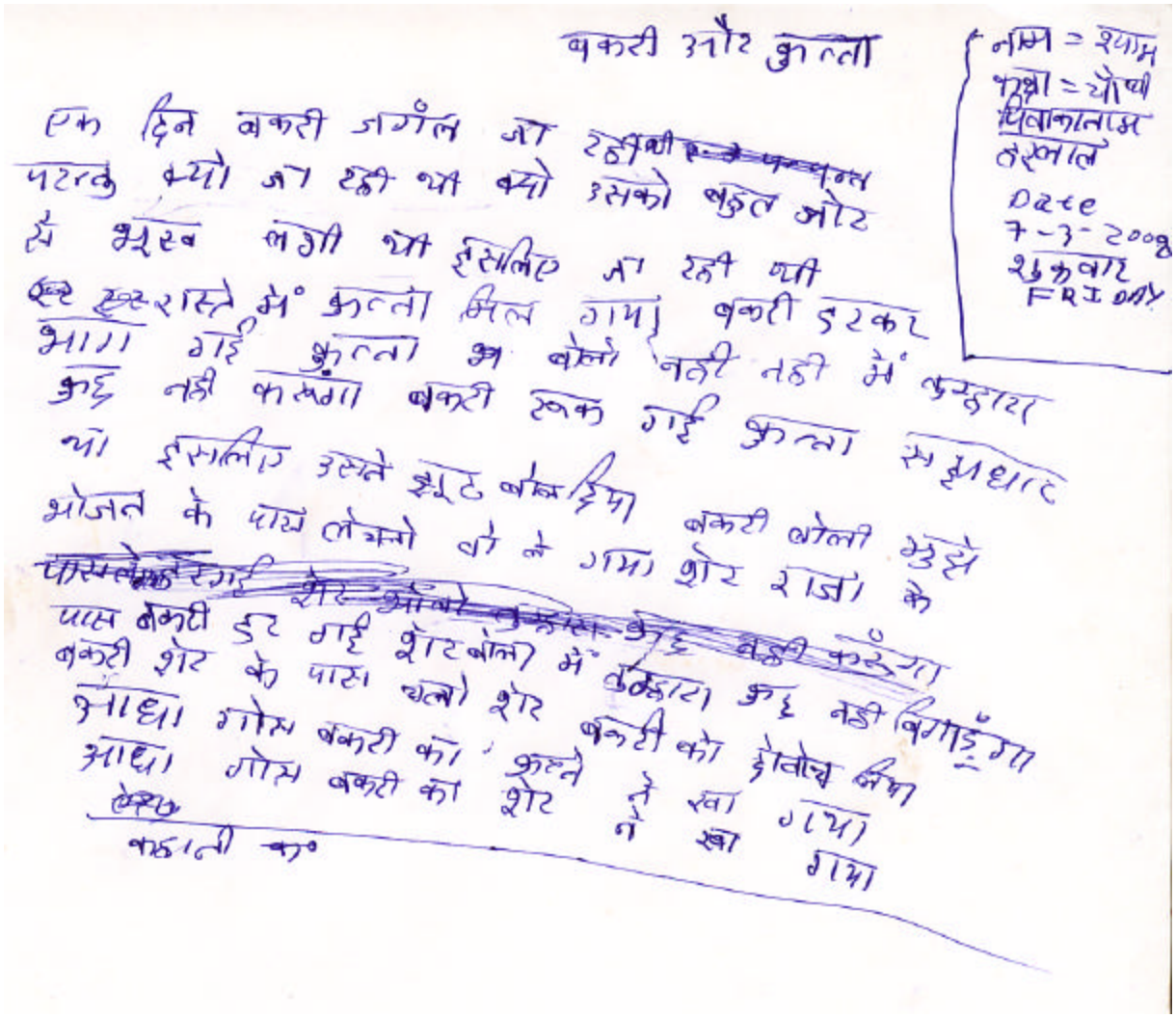

श्याम द्वारा लिखी गई बकरी और कुत्ते की कहानी जो कि उसकी स्वयं की रचना है–

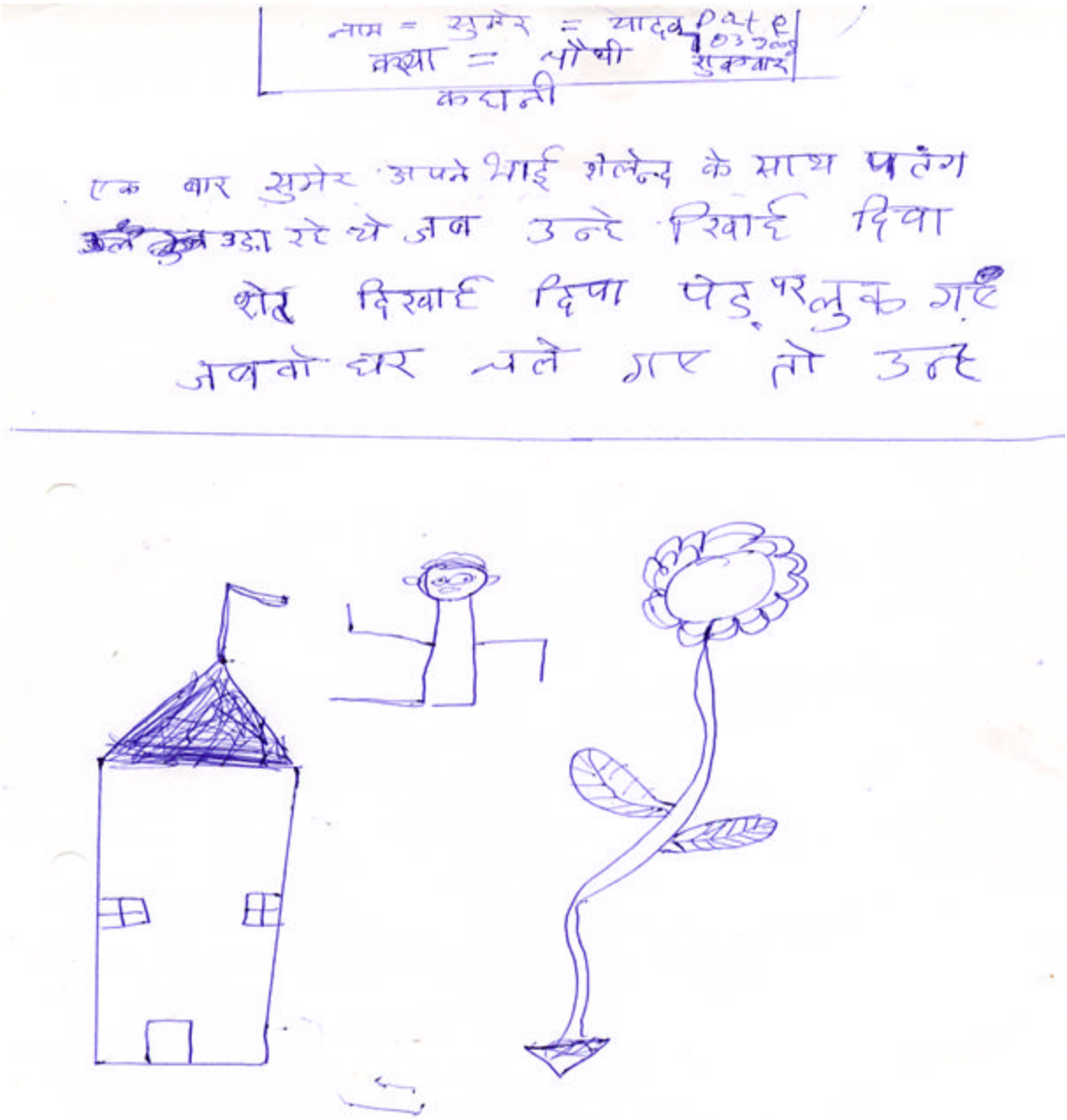

सुमेर द्वारा लिखी गई एक कहानी जो शायद उसी का एक निजी अनुभव है।

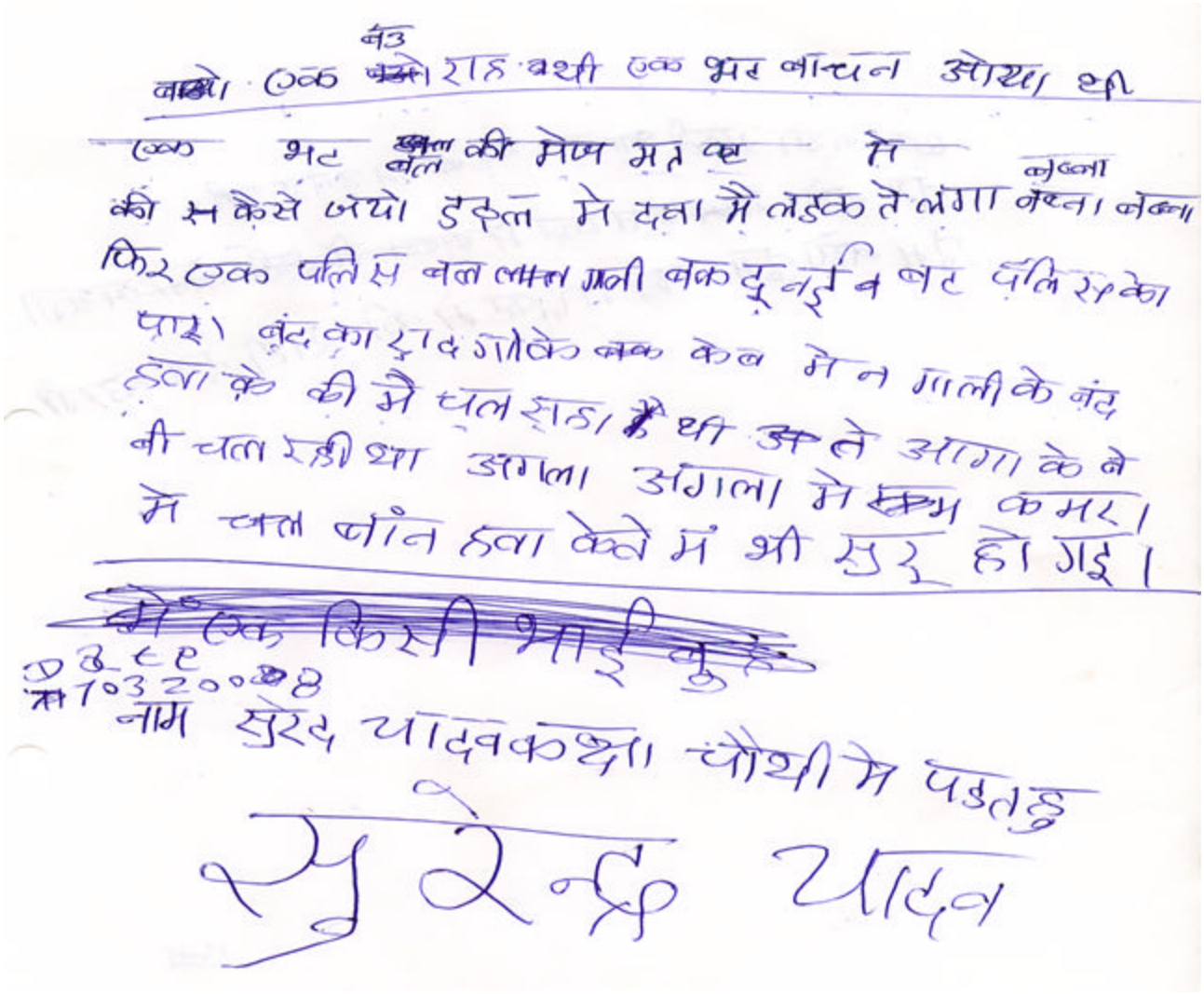

सुरेन्द्र द्वारा लिखी गई एक कहानी जिसे पढ़ पाना कठिन काम है। लेकिन कहानी उसी की ही रचना है।

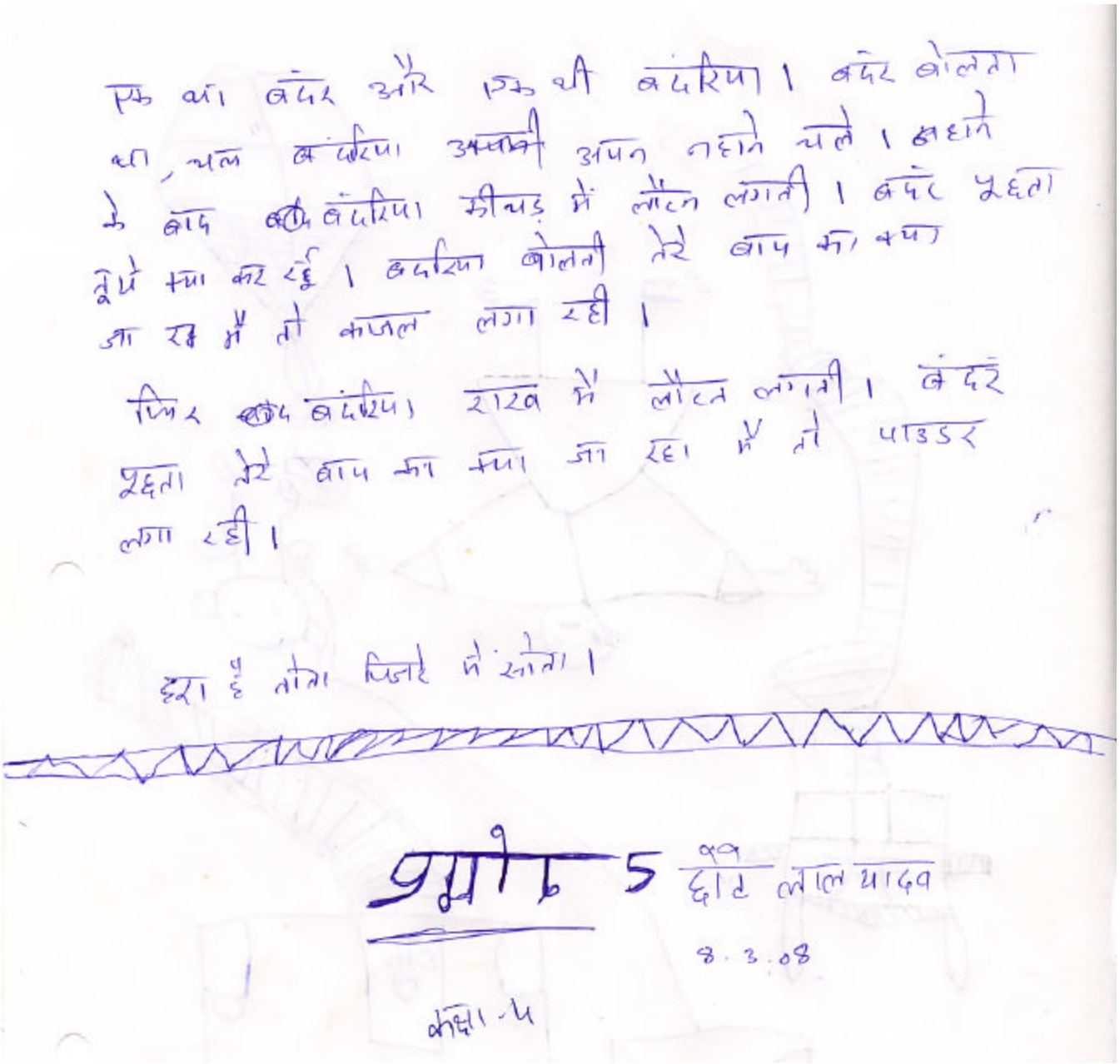

यह कहानी प्रमोद द्वारा सुनाई गई जिसे मैंने सुनकर लिखा।

अरमान जंगल गया था। एक दिन वह एक
शेर आया तो भाग गया। अरमान एक बार
वहां से चला गया। फिर बंदर आ गए। अरमान
चला गया। घर आ गया था। उसके चाचा ने
पूछा के तुम कहां गए थे। जंगल गए थे। किताब
में बताया था। शेर और बंदर। अरमान ने
कलर कर दिया तो सुंदर लगने लगे और जंगल
फिर गया था। अरमान सोचा कि यहां तो
कोई भी नहीं है। अरमान आगे गया था वहां पे
उसे शेर दिखाई दिया बंदर दिखाई दिया था।
अरमान वहां रुकी पे नहाने लगा। वहां से
आगे चलकर ~~कैदू~~ नदु लगे थे। और बहेड़े लगे
थे। अरमान ने सोचा आगे चलकर फिर वापिस
आ गया। फिर वापिस आया। तो शेर [illegible]
गया। अरमान और फिर अपने दोस्त के साथ
चला गया।

अरमान, 8.3.08
मामाखेड़ी प्राथमिक स्कूल, कक्षा-4

अरमान द्वारा सुनाई गई एक कहानी जिसे मैंने जस का तस लिखा।

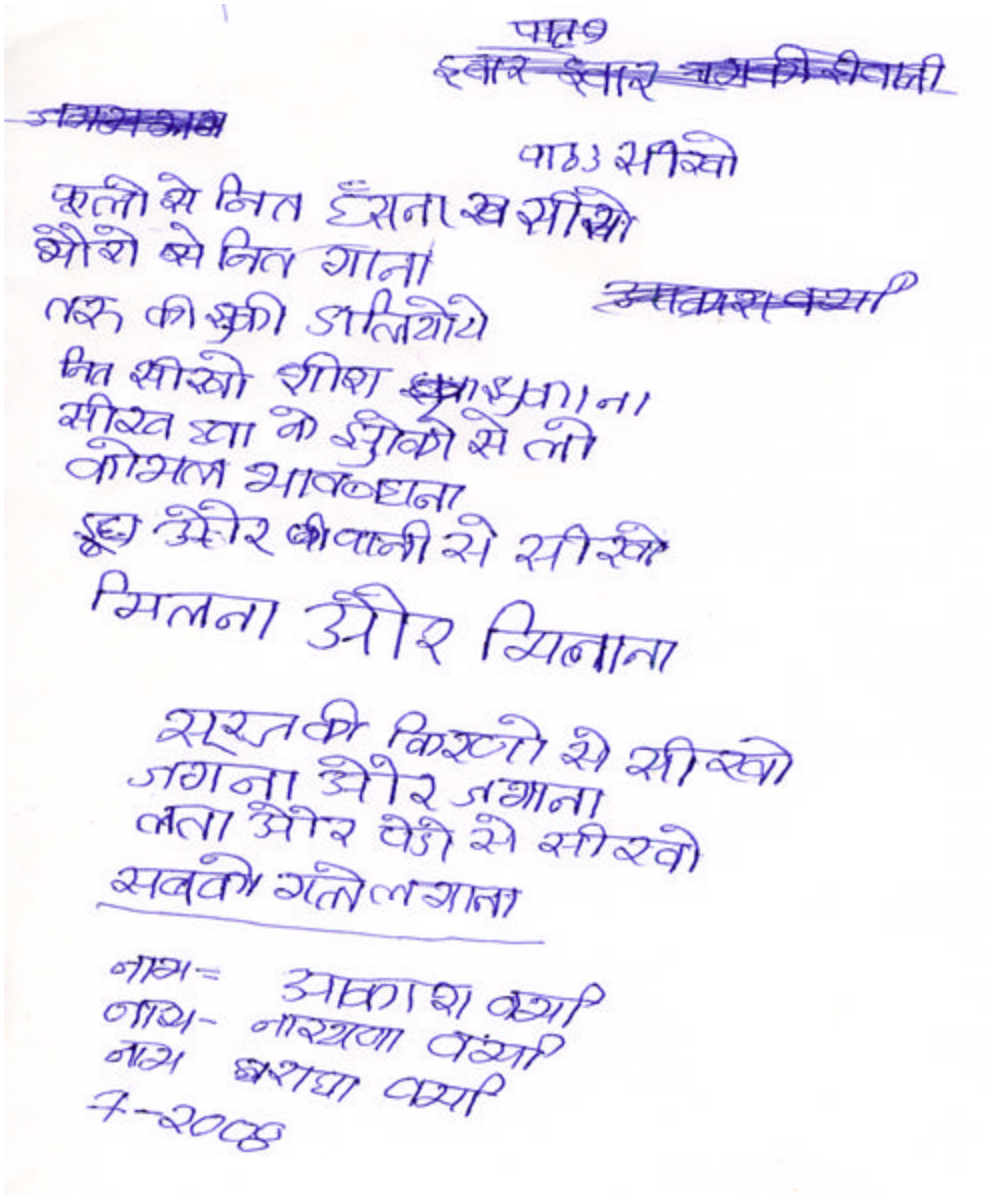

आकाश द्वारा पुस्तक से देख कर लिखी गई कविता।

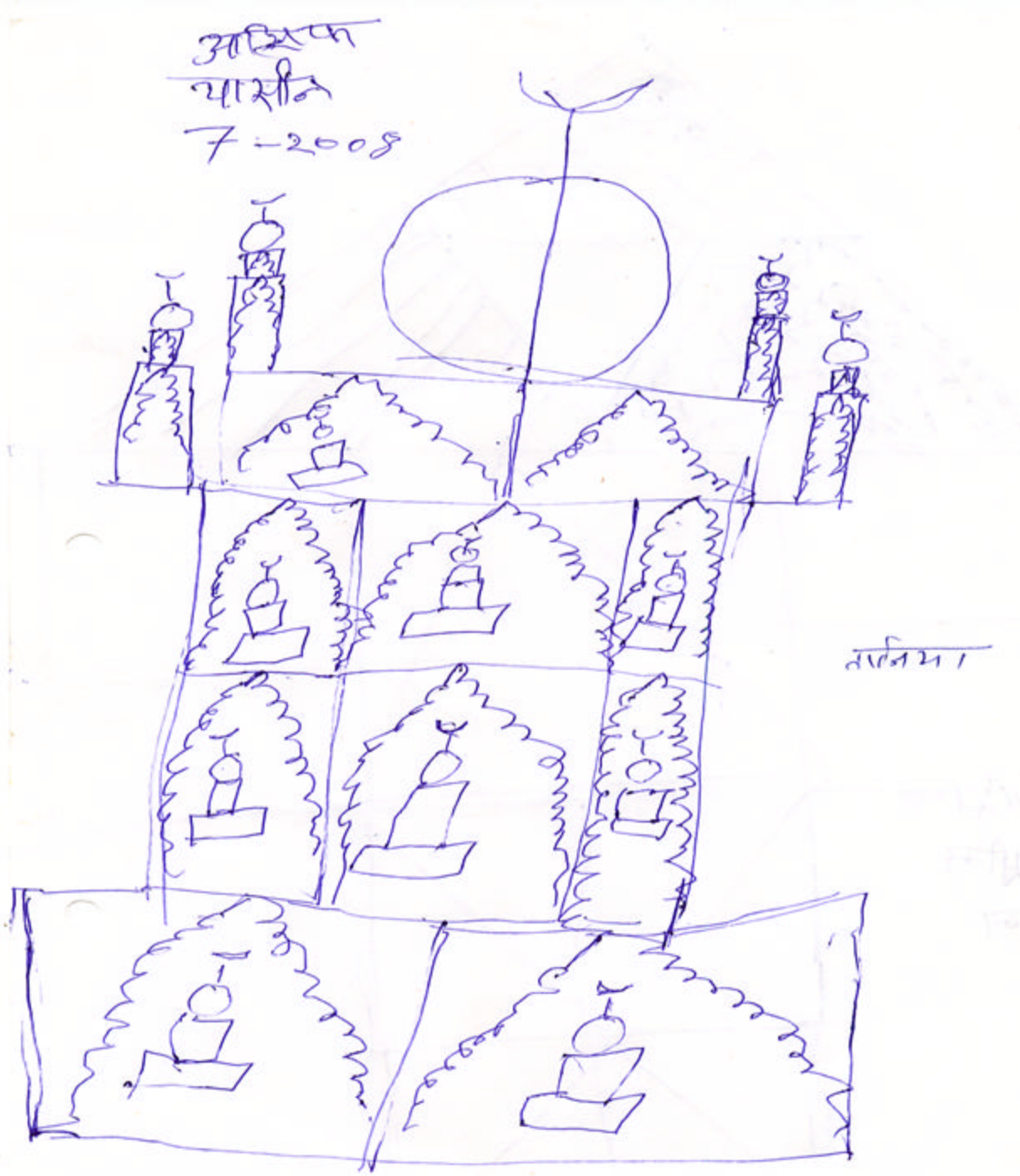

आसिफ द्वारा बनाया गया ताजिए का चित्र।

अब हम दोनों कक्षाओं से प्राप्त लेखन को एक सरल वर्गीकरण के तहत समझने की कोशिश करें –

1. बच्चों का न लिख पाना
2. बच्चे का लिख पाना
3. बच्चों का लिखना सीखना

बच्चों का लिख पाना

शुरूआत न लिख पाने से करते है। जब बच्चे कहते है कि उन्हें लिखना नहीं आता या उनसे लिखते नहीं बनेगा, तो यह जानना जरूरी है कि उन्हें क्या लिखना नहीं आता। वे यह भी जानते हैं कि लिखना क्या होता है? उनका भय अपनी किस अक्षमता को लेकर है?

- क्या उन्हें अक्षर ज्ञान नहीं है?
- क्या उन्हें सही मात्राएं लगाना नहीं आता?
- क्या उन्हें शब्दों के उपयोग का सही ज्ञान नहीं है?
- क्या उन्हें अपने विचारों को लिपिबद्ध करना नहीं आता?
- क्या उन्हें लिखने के लिए विचार गढ़ना नहीं आता?
- क्या बच्चे सोच नहीं सकते कि क्या लिखा जाना चाहिए?
- मुझे लगता है कि उनका एक महत्वपूर्ण डर यह भी है कि वे जो सोचते हैं वो लिखा भी जा सकता है क्या?

बच्चों का लिखना

अगर हम उपलब्ध लेखन को देखे तो मोटे तौर पर चार श्रेणियों में बांटकर देख सकते हैं–

1. बच्चों ने पुस्तक से देखकर लिखा
2. बच्चों ने मन से लिखा
3. बच्चों ने मन का लिखवाया
4. बच्चों ने मन का चित्र बनाया

हम यहां बच्चों के लेखन में लिपि बोध की कमी पर चर्चा नहीं करेंगे। जहां बच्चों ने पुस्तक से नकल की है वहां यही कहा जा सकता है कि बच्चों की नकल करने की क्षमता अच्छी या खराब है। यहां प्राप्त उदाहरणों में भी यह सब देखने को मिलता है।

लेकिन जब हम 'लिखना आना' कहते हैं तो उसका ठीक अर्थ है अपने मन की बात को लिख पाना।
अब हम दूसरी श्रेणी के लेखन की बात करते है जिसमें बच्चों ने स्वयं के मन में उठे विचारों को व्यक्त करने का प्रयास किया है।

श्याम को अगर हम देखें तो वह इस श्रेणी में सबसे ऊपर आता है। वह उसकी कहानी उसकी अपनी रचना है। इसी श्रेणी में सुमेर भी आता है, फिर भी एक नजर में देखें तो श्याम को सुमेर से ऊपर रखेगें क्योंकि सुमेर ने श्याम से कम लाईनें लिखी हैं?

हां, यह एक आधार हो सकता है क्योंकि श्याम अपने कौशल का उपयोग सुमेर से ज्यादा कर रहा है।

अब, सुरेन्द्र के लेखन को समझें। हम उसकी लिखाई को पढ़ कर समझ नहीं सकते। लेकिन यह किताब से नहीं लिखा गया। इसके दो प्रमाण है पहला, सुरेन्द्र का लेखन बाकी बच्चों जैसा नकल नहीं है।
दूसरे, सुरेन्द्र ने लिखते वक्त मुझसे कुछ शब्दों को कैसे लिखा जाता है, यह पूछा था। ये शब्द थे– बब्बा, कैसे, डंठल बक दूं, गाली।

तीसरी श्रेणी अरमान व प्रमोद की है। इन्होंने अपनी बात मुझसे लिखवाई। प्रमोद ने जो लिखवाया वह उसकी सांस्कृतिक विरासत का ही अंग है। अतः प्रमोद को एक रचयिता तो नहीं कहा जा सकता परन्तु वह अपने सांस्कृतिक परिवेश को आत्मसात कर रहा था। लेकिन जो अरमान ने लिखवाया वह अन्य उदाहरणों की ही तरह यह बात साफ करता है कि ये बच्चें विचार गढ़नें में तो सक्षम थे। उसे लिपि का ज्ञान नहीं है परन्तु उसने जो कुछ लिखवाया वह किसी पुस्तक से नहीं लिया गया है।

अब आसिफ की बात करें। लिखने के बजाए उसका चित्र बनाना कुछ सोचने पर मजबूर करता है आखिर उसने ताजिए का चित्र क्यों बनाया? जरूर वह ताजिए के बारे में सोच रहा होगा, अगर उसे लिखना आता तो जरूर वह ताजिए के बारे में कुछ लिखता या उससे इस विषय पर बात की जाती तो वह कुछ बताता। उसके चित्र से यह स्पष्ट होता है कि वह चिंतन तो कर रहा था।

'ब' कक्षा क लेखन को समझे तो एक बात साफ हो जाती है कि बच्चे विचार तो गढ़ सकते है। उनके न लिखने का कारण या लिखने से हिचकने का कारण यह नहीं हो सकता।

तो हम बच्चों को लिपि बोध न होने को कारण मानकर दोनों कक्षाओं के लेखन की जांच करें तो पाते है कि कक्षा 'अ' को लिपि बोध है और उन्होंने उसके अनुसार लिखा है। लेकिन अगर इनका तुलनात्मक अध्ययन कक्षा 'ब' के छात्रों से करें तो कक्षा 'ब' के लेखन में अपेक्षाकृत विविधता देखने को मिलती है, उसमें अपनी सोच व क्षमताओं के साथ एक प्रयोगधर्मिता देखने को मिलती है। कक्षा 'अ' के बच्चों के लेखन में स्वयं लिखने के नाम पर बात गाय के निबंध से आगे नहीं जाती है जबकि 'ब' कक्षा के बच्चों ने अपने भाषायी ज्ञान को स्वतंत्रता से उपयोग करने में छूट ली है। इन उदाहरणों में लेखन अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए है मात्र साक्षर होने का प्रतीक नहीं है। बच्चें शब्दों को नहीं, भाषा को, विचारों को लिखने का प्रयास कर रहे हैं। यहां लिखना केवल 'मोटर स्किल' नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक गतिविधि के तौर पर देखी जा सकती है।

बच्चों का लिखना सीखना

मोंटेसरी के शब्दों में बच्चे का लिखना सीखना उसके विकास का एक स्वाभाविक अंग होना चाहिए, न कि एक प्रशिक्षण के रूप में आना चाहिए। उत्तम विधि वही है जिसमें लिखना व पढ़ना खेल–खेल में आ जाए, और जिस तरह बोली हुई भाषा बच्चे के जीवन का हिस्सा है उसी तरह अक्षर भी हो जाएं। यह जब तक चलते रहना चाहिए जब तक कि वे यह खोज न कर लें कि वे न केवल चीजों के चित्र बना सकते है बल्कि बातों को भी चित्रित कर सकते है। क्योंकि हमारा उद्देश्य यह नहीं है कि बच्चे सिर्फ अक्षर लिखना सीखें बल्कि यह है कि बच्चे भाषा लिखना सीखें।

अब इस चर्चा की थोड़ी और गहराई में चलें। कक्षा 'अ' के अनुभव से कक्षा 'ब' के अनुभव की तुलना की प्रासंगिकता पर थोड़ा विचार करें तो हम देखते है कि कक्षा 'ब' के आसिफ से श्याम तक जो उदाहरण हमनें देखे उनमें हमें वायगोत्सकी के शब्दों में 'वस्तुओं के चित्रण' से 'जबान के चित्रण' तक का एक सफर देखने को मिलता है। इसके साथ अलग–अलग लेखनों में ही सही एक क्रम भी दिखाई देता है, जिसमें हम बच्चों के सीखने के क्रम को देख सकते है।

कक्षा 'ब' क`लेखन में हमें दिखता है कि उसमें एक उद्देश्य निहित है और अभी वह उनकी अपनी निजी जरूरत को पूरा कर रहा है। लिखना सीखने (कायदे से देखें तो वे लिखने में अपने को व्यक्त कर रहे हैं,) में बच्चें अपने विचारों व सोच का लिपि से संबंध सीधे तौर पर देख रहे हैं। उनका लेखन लिखने की सांस्कृतिक उपयोगिता का एक उदाहरण है। उन्हें स्पष्ट बोध होता है कि जो वे सोचते हैं वह लिखा भी जा सकता है। यह एक महत्वपूर्ण उपब्धि है।

कक्षा 'ब' के बच्चों के लेखन को मैं कुछ आदतों के परिणाम के रूप में भी देखता हूं, जैसे उनका निर्भिक होना, अलग–अलग तरह की पुस्तकें पढ़ना, स्वयं कहानियां लिखना, कहानियां सुनना व सुनाना, कक्षा में अपने अनुभवों पर खुल कर बोलना, आदि।

सीखने की प्रक्रिया में बच्चों का निर्भीक होना महत्वपूर्ण है। क्योंकि किसी भी शिक्षण प्रक्रिया में एक निर्भीक बच्चा ही सक्रिय भूमिका निभा सकता है, और सक्रिय होना सीखने के लिए पहली शर्त है।[पप] परन्तु यह एक आम बात है कि कक्षा में बच्चों को विभिन्न कारणों से नियंत्रित करने की कोशिश की जाती है। इस नियंत्रण के प्रभाव प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों के स्वभाव में होने वाले परिवर्तनों में आसानी से देखे जा सकते है। कक्षा 'अ' व कक्षा 'ब' के बच्चों के लेखन पर तुलनात्मक दृष्टि डालने से हम इसके प्रमाण देख सकते है।

सोशल सिचुएटिडनैस (सामाजिक परिवेश) की अवधारणा के अनुसार व्यक्ति के बौद्धिक विकास में उसके सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है।[पपप] कक्षा का माहौल भी बच्चें के लिए उसी परिवेश का अंग में होता है। कक्षा में बच्चे व शिक्षक मिलकर एक संस्कृति को जीते हुए उसका निर्माण भी करते है। लेकिन इस संस्कृति के मूल्य क्या हैं यह महत्वपूर्ण है। ये मूल्य बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करते है। क्या, कक्षा में बच्चे भय व अविश्चास के शिकार हैं, या उन्हें कुछ अलग ढंग से करने की छूट है या फिर बच्चों से केवल एक निश्चित ढंग से काम करवाना उचित माना जाता है? ये सब बातें बहुत गहरे महत्व की हैं।

जैसा हमने देखा लिखने के लिए विषय के चुनाव की स्वंतत्रता होने के बावजूद कक्षा 'अ' के बच्चों द्वारा लिखने के लिए उन्हीं कविताओं का चुनाव किया जाना जो उन्होंने पाठ्यपुस्तकों में पढ़ी थीं, बच्चों पर नियंत्रण के प्रभाव का आभास देता है। यहां तक कि बच्चों के चित्रों में भी यह बात देखने को मिलती है। अगर बच्चे केवल पाठ्यपुस्तक से कुछ चीजें नकल करेंगे तो लिखना एक यांत्रिक गतिविधि हो जाती है और बच्चे जल्दी ही इससे ऊबने लगते है। इस तरीके से बच्चे की लेखन क्षमता में कोई परिवर्तन नहीं आता और बच्चे को स्वयं के लेखन को विकसित करने का अवसर नहीं मिलता। बच्चों को दिल से लिखने की जरूरत महसूस होनी चाहिए। तभी हम यह सुनिश्चित कर पाएंगे कि उनके लिए यह विधा केवल हाथ व उंगलियों की आदत न होकर अपनी बात व्यक्त करने के लिए भाषा का ही एक नया व जटिल रूप है।

ताज्जुब इस बात का नहीं है कि बच्चे वे चीजें लिख रहे है जो उन्होंने पाठ्य पुस्तकों में पढ़ी हैं ताज्जुब इस बात का है कि जब उन्हें मन से कुछ भी लिखने की या चित्र बनाने की छूट मिलती है तब भी वे अपने आप को वही लिखने को बाध्य कर रहे है जो उन्होंने पाठ्य पुस्तकों से सीखा है। जबकि पाठ्य पुस्तक के अलावा भी वे किस्से सुनते है और खुद भी कई किस्से जानते है। उनके आस–पास कितनी घटनाएं घटती रहती हैं, लेकिन लिखते समय उन सबको ये बच्चे अनदेखा क्यों करते हैं?

यह एक गंभीर सवाल ही नहीं, चिन्ता का विषय भी है। क्योंकि ऐसा स्वभाव सीखने की अनिवार्य शर्त– एक सक्रिय मस्तिष्क को पूरा नहीं करता। बच्चे ने इसी उमर में एक तरह की उदासीनता को अपना लिया है उन्हें जो चीजों को देखने के बावजूद अनदेखा करने के

लिए प्रेरित करती है। लिखना आने के बावजूद उन्हें केवल एक खास चीज लिखने तक ही सीमित रखती है। यह उदासीनता बच्चों को अपनी इन्द्रियों के उपयोग करके कुछ रचने की प्रवृत्ति को रोकती है। क्या ऐसी उदासीनता बच्चे के स्वभाव का अंग होना चाहिए, क्या यह कक्षा के माहौल में ऐसी उदासीनता होनी चाहिए? इन प्रश्नों पर विचार करके एक शिक्षक को यह तय करना होगा कि वह अपनी कक्षा में किन मूल्यों को प्राथमिकता दे।

नोट– कक्षा 'ब' के साथ मैंने लगभग 4 महीने काम किया। तब ये बच्चे कक्षा 3 में थे। कक्षा में सवांद को माध्यम बनाते हुए शिक्षक व छात्रों के बीच सरल संबंधों को स्थापित करने का प्रयास किया गया। बच्चों को प्रोत्साहित किया गया कि पाठ्यपुस्तक के अलावा भी वे अन्य पुस्तकें पढ़ें। बच्चे स्वयं के अनुभवों पर आधारित कहानियां बनाते थे और उन्हें पठन सामग्री के तौर पर भी उपयोग किया जाता था। इस प्रक्रिया में बच्चों के पढ़ने–लिखने संबंधी कई अवलोकन रहे। परन्तु मुख्य आकर्षण था कक्षा के स्वंतत्र माहौल और बच्चों की अभिव्यक्ति की मौलिकता के अंतर्संबंध को समझना।